पाठ — 15

सरलता और सहृदयता

43E4JH

श्री एस. के. दत्त

इंसान महान सिर्फ अपनी डिग्रियों और पद से ही नहीं होता अपितु अपनी सादगी, सहजता और सहृदयता से बनता है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने राष्ट्रपति जैसे सर्वोच्च पद पर आसीन होते हुए भी अपने मानवीय मूल्यों को हमेशा उपर रखा। घर के एक साधारण नौकर के प्रति उनके अपनत्व भरे व्यवहार को दर्शाती यह कहानी हृदय में संवेगों का संचार करती है।

वह नौकर बचपन से ही उनके घर काम करता आ रहा था। अब वह बूढ़ा हो गया था। उसने घर के बच्चों को अपनी उँगली पकड़कर चलना सिखाया था। अब वे बच्चे बड़े हो गए थे। वे बच्चे ऊँचे-ऊँचे पदों पर पहुँच गए थे। पर इस बूढ़े काका के प्रति सबके मन में स्नेह और सम्मान की भावना थी। सब उन्हें अपने परिवार का एक सदस्य समझते थे। परिवारवाले चाहते थे कि ये बूढ़े काका अब काम-काज करना बंद कर दें और शेष जीवन आराम से गुजारें, पर ये थे कि मानते ही नहीं थे। घर की सफाई, झाड़-पोंछा तथा कमरों की देख-भाल खुद किया करते थे।

एक दिन ये बूढ़े काका अपने बाबू के पढ़ने के कमरे की सफाई कर रहे थे। अपने बाबू के एक-एक सामान को उठाते, उसकी धूल पोंछते और उसे यथा-स्थान रख देते। अचानक जाने कैसे एक बहुत कीमती कलमदान उनके हाथ से छूट गया। कोई साधारण कलमदान नहीं था वह, कारीगरी का उत्कृष्ट नमूना था, बहुत कीमती तथा दुर्लभ था।

बूढ़े काका जी टूटे हुए कलमदान को एकटक देखते रहे। उन्हें कुछ सूझा नहीं कि अब क्या करें? चुपचाप वह टूटा हुआ कलमदान उठाकर मेज़ पर रख दिया, पर वे बहुत घबरा गए। 'बाबू आएँगे, तो वे उनसे क्या कहेंगे ? वे डाँटेंगे, तो मैं क्या उत्तर दूँगा ? ऐसा कीमती कलमदान तो अब मिलेगा नहीं, कितना दुख होगा 'बाबू' को ?' यही सोच-सोचकर उनका दिल बैठा जा रहा था।

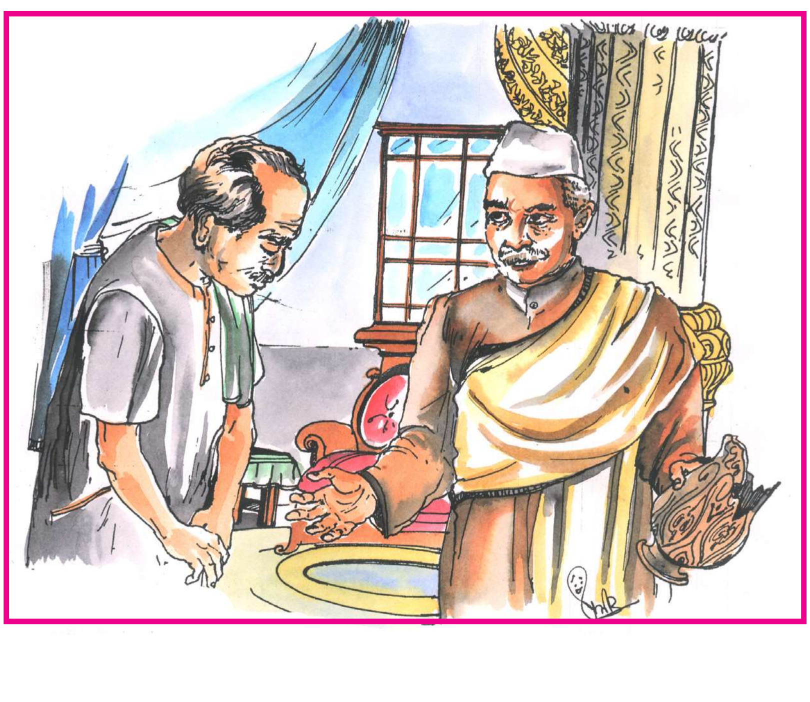

सायंकाल 'बाबू' आए और भोजन के उपरान्त अपने कमरे में अपना दैनिक काम–काज निपटाने चले गए । कमरे में पहुँचे ही थे कि उनकी नज़र टूटे हुए कलमदान पर पड़ी । वे इतने कीमती कलमदान को टूटा हुआ देखकर बहुत दुखी हुए । उन्होंने उसे उठाया तो देखा उसके दो टुकड़े हो चुके थे । उन्होंने बूढ़े काका को आवाज़ दी–'काका । काका ।'

बूढ़े काका ने डरते हुए प्रवेश किया।

'यह कलमदान किसने तोड़ा ?'

'मुझसे टूट गया, मालिक।'

'कैसे ?'

'मैं सफाई कर रहा था कि अचानक हाथ से छूट गया।'

'जानते हो यह कितना कीमती था ? ऐसा दूसरा कलमदान कहाँ मिलेगा ?'

बूढ़े काका सिर नीचा किए सुनते रहे।

'अब खड़े–खड़े मेरा मुँह क्या देख रहे हो, जाओ यहाँ से। .... और हाँ, कल से मेरे पढ़ने के कमरे की सफाई मत करना।' बूढ़ा डाँट खाकर, सिर नीचे किए चुपचाप चला गया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। इससे पहले अपने 'बाबू' से उसे कभी ऐसी डाँट नहीं खानी पड़ी थी।

रात हो गई। 'बाबू' अपने बिस्तर पर लेटे–लेटे सोने की कोशिश कर रहे थे, पर न जाने क्यों आज नींद आने का नाम ही नहीं लेती थी। उनका मन अशांत था। वे रह–रहकर अपने कलमदान, बूढ़े काका और उनके प्रति अपने व्यवहार के बारे में सोच रहे थे।

'बचपन से ही ये काका हमारे यहाँ काम कर रहे हैं। इन्होंने तो मुझे उँगली पकड़कर चलना सिखाया। क्या उनके प्रति मेरा ऐसा कठोर व्यवहार उचित था ?'

'क्या एक कलमदान एक व्यक्ति के सम्मान से अधिक कीमती है ?'

'अगर गलती से उनसे वह कीमती कलमदान टूट भी गया, तो क्या हुआ ? यदि वह मुझसे गिरकर टूट जाता तो .... ?'

'कितनी सेवा की है उन्होंने हमारे परिवार की ? कभी शिकायत का कोई मौका नहीं दिया, पर आज मैंने उन पर इतना क्रोध करके क्या उनकी सारी सेवा पर पानी नहीं फेर दिया ?'........इस तरह के अनेक सवाल 'बाबू' के मन में उठते और उनका मन अधीर हो उठता।

रात काफी हो चुकी थी। बाबू ने बूढ़े काका को आवाज़ दी। बूढ़े काका भी सो नहीं रहे थे। वे भी अपनी गलती को याद करके आँसू बहा रहे थे। अचानक बाबू की आवाज़ सुनकर उन्होंने आँसुओं को पोंछा और वे डरते–डरते 'बाबू' के कमरे की ओर जाने लगे। परंतु काका ने देखा बाबू उन्हीं की ओर आ रहे हैं। काका की घबराहट और बढ़ गई । वे सोचने लगे, 'शायद बाबू का गुस्सा अभी ठंडा नहीं हुआ है ।' काका सिर नीचे करके खड़े हो गए ।

'काका ! मुझे माफ कर दो । मैं अपने व्यवहार पर शर्मिंदा हूँ ।' .... अचानक बाबू के मुँह से निकला ।

बूढ़ा काका उनके मुँह की ओर देखता रह गया । इतना बड़ा आदमी एक छोटे-से नौकर से माफी माँग रहा है । वह 'बाबू' के पैरों में गिरकर माफी माँगने को झुका ही था कि बाबू ने उसे बीच में ही रोक दिया । 'काका ! क्या आप मुझे क्षमा नहीं करेंगे ?'

'बाबू ! आप ये क्या कह रहे हैं ? मुझसे जो भूल हुई है, मैं उसके लिए शर्मिंदा हूँ । फिर कहाँ आप और कहाँ मैं .... ?'

बाबू बोले, 'जब तक आप मेरे सर पर हाथ रखकर नहीं कहेंगे कि आपने मुझे क्षमा कर दिया है, मुझे चैन नहीं पड़ेगा ।' बूढ़े काका की आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई । उन्हें बाबू के सिर पर हाथ रखकर कहना पड़ा, 'अच्छा, चलो, मैंने अपने 'बाबू' को क्षमा कर दिया ।'

बच्चो ! क्या तुम जानते हो ये 'बाबू' कौन थे ? ये 'बाबू' थे भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद । यह घटना तब की है, जब वे राष्ट्रपति भवन में थे और उनके एक पुराने बूढ़े सेवक से उनका एक बेशकीमती कलमदान टूट गया था जो उन्हें किसी बड़े आदमी ने उपहार में दिया था। ज़रा सोचो, भारत के राष्ट्रपति होकर भी वे कितने उदार, सहृदय और विनम्र थे । घमंड तो उन्हें छू तक न गया था ।

शब्दार्थ :— **कमलदान** — कलम रखने का पात्र, दिल बैठना (मुहावरा), **सायंकाल** — संध्या, शाम, **अचानक** — सहसा, अकस्मात्, **कोशिश** — प्रयत्न, **अधीर** — अस्थिर, बेचैन, **घबराहट** —व्याकुलता, अधीरता, **शर्मिन्दा** — लज्जित, **उदार** — शीलवान, **सहृदय** — दयालु, **विनम्र** —सुशील।

अभ्यास

पाठ से

1. काका के बाबू कौन थे?
2. बूढ़े काका का, घर के सभी लोग सम्मान क्यों करते थे?
3. परिवार वाले क्यों चाहते थे कि बूढ़े काका काम करना बंद कर दें?
4. राजेन्द्र बाबू का मन अशांत क्यों था?
5. राजेन्द्र बाबू को नींद क्यों नहीं आ रही थी?
6. कीमती कलमदान कैसे टूटा ?
7. बूढ़े काका क्यों नहीं सो पा रहे थे?
8. राजेन्द्र बाबू ने बूढ़े काका से क्षमा क्यों माँगी?
9. बूढ़े काका ने बाबू के सिर पर हाथ रखकर क्या कहा?
10. राजेन्द्र बाबू को अपने किए पर पछतावा क्यों हुआ?

पाठ से आगे

1. 'क्या एक कलमदान एक व्यक्ति के सम्मान से अधिक कीमती है'? विचार कर लिखिए।

43MZLA

2 बूढ़े काका ने सच बोलकर अपनी गलती स्वीकार की और डाँट खाई। वो झूठ बोल कर कलमदान तोड़ने का दोष दूसरे पर लगा सकते थे। क्या उनका दूसरे पर दोष मढ़ना उचित होता? अपने विचार कारण सहित लिखिए।

3. बूढ़े काका ने गलती की थी इस लिए राजेन्द्र बाबू ने उन्हे डाँटा। राजेन्द्र बाबू ने डाँट कर सही किया या गलत? अपने विचार लिखिए।

4. बूढ़े काका को डाँटने के बाद राजेन्द्र बाबू बेचैन और अधीर हो गए थे। क्या आपके साथ भी ऐसी कोई घटना हुई है जिससे आप बेचैन हो गए हों?

5. बूढ़े काका ने कलमदान जान बुझ कर नहीं तोड़ा भी फिर भी उन्होंने चुप–चाप डाँट सह ली। अगर आप उनकी जगह होते तो क्या करते?

भाषा से

(1) इन शब्दों को देखिए –

आजन्म, अतिशय, उपाध्यक्ष, पराजय, प्रबल, विवाद। इन शब्दों में मूल शब्दों के साथ 'आ', 'अति', 'उप', परा 'प्र' और 'वि' जुड़े हैं, जो शब्दों के अर्थ का विस्तार कर रहे हैं। इस प्रकार के अव्ययों या शब्दों को जो किसी शब्द के आगे जुड़ कर उसके अर्थ में विस्तार कर देते हैं, उपसर्ग कहते हैं।

43HVMX

अब आप निम्नालिखित शब्दों से उपसर्ग पहचान कर अलग कीजिए–

प्रतिदिन, आक्रमण, संयोग, सुगम, अभिनंदन, अनुकरण, अधिकार, उत्तीर्ण, निबंध, उपग्रह।

2. अब इन शब्दों को देखिए –

धनवान, सफलता, आनेवाला, श्रेष्ठतर, पहनावा, घटिया, होनहार, कुलीन, लेखक, सूखा।

इन शब्दों में क्रमशः 'वान', 'ता', 'वाला', 'तर', 'आवा', इया , हार', 'ईन' 'अक', 'आ' शब्दों के पीछे लगकर शब्दों को विशिष्ट अर्थ प्रदान कर रहें हैं। इस प्रकार के शब्दों अथवा अव्ययों को प्रत्यय कहते है।

अब आप निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग कीजिए :–

घबराहट, कुलीन, चमक, पवित्र, पाँचवाँ, मिलनसार, घूसखोर, अफीमची, सुनवाई।

3. नीचे लिखे शब्दों में प्रत्यय और उपसर्ग दोनों हैं। उन्हें अलग कीजिए –

अपमानित, अधार्मिक, अभिमानी, बेचैनी, दुस्साहसी, उपकार, अनुदारता, निर्दयी

4. निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से देखिए –

पशु, सुंदरता, व्यथा, मोहन, दिल्ली, मारना

इन शब्दों से जाति, गुण, भाव, व्यक्ति, स्थान तथा क्रिया का बोध हो रहा है इस प्रकार के शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

अब इन शब्दों को भी देखिए–

मनुष्य, नदी, नगर, पर्वत, पशु, पक्षी, लड़का, कुत्ता, गाय, घोड़ा, नारी, गाँव।

इन शब्दों से व्यक्ति स्थान, वस्तु आदि की जाति का बोध हो रहा है इस प्रकार के संज्ञा शब्दों को

जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। इसी प्रकार अमेरिका, नमक, अनिल जैसे शब्द एक व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध कराते हैं इसलिए इस प्रकार के संज्ञा शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

बुढ़ापा, मिठास, बचपन, मोटापा, थकावट, चढ़ाई जैसे शब्दों से किसी व्यक्ति या पदार्थ की अवस्था, गुण–दोष अथवा गुणधर्म का बोध होता है इसलिए इन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

अब आप निम्नलिखित शब्दों में से जातिवाचक, व्यक्तिवाचक तथा भाववाचक, संज्ञाओं को पहचान कर लिखिए –

सहायता, नारी, रामायण, जुलूस, प्यास, कपिला, मद्रास, सलाह, संतोष, ताँबा, पिता, युवक, गंदा, जवान, चोर, रसगुल्ला, सूरज, ऐरावत, परिवार, कक्षा, रामायण।

5. नीचे लिखे हुए वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए–

क. मैं चटाई पर <u>लेट गया</u>।

ख. मोहन कहानी सुनाते–सुनाते <u>रो पड़ा</u>।

ग. तिरंगे के सम्मान में सर <u>झुक जाता</u> है।

घ. वह रायगढ़ से <u>लौट आया</u> है।

ङ. सीता कल ही दिल्ली <u>पहुँच गयी</u> थी।

च. ट्रेन जल्दी ही <u>आ जाएगी</u>।

रेखांकित शब्दों में दो अलग–अलग क्रियाएँ एक साथ मिलकर किसी घटना को दिखा रही हैं। इस प्रकार जब दो अलग क्रिया शब्द एक साथ मिल कर एक नयी पूर्णक्रिया का बोध कराते हैं तो उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं।

अब आप नीचे दिए हुए क्रिया शब्दों में से नये संयुक्त क्रिया शब्द बनाइए तथा वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

पढ़ना, खाना, आना, करना, पाना, लिखना, जाना, लड़ना।

नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए और समझिए :

क. 'यह कोई साधारण कलमदान नहीं था ?'

ख. 'कोई साधारण कलमदान नहीं था यह।' दोनों वाक्यों का अर्थ एक ही है, लेकिन दूसरे वाक्य में शब्दों का स्थान बदलकर कथन अधिक सशक्त बना दिया गया है।

आप भी इस तरह के दो उदाहरण लिखिए –

6. **निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

दिल बैठ जाना, खड़े–खड़े मुँह देखना, पानी फेर देना, झड़ी लग जाना।

7. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।**

दुर्लभ, उदार, उत्कृष्ट, साधारण, प्रश्न।

8. **निम्नलिखित शब्द–युग्मों को ध्यान से पढ़िए और उन्हें इस प्रकार वाक्यों में प्रयोग कीजिए कि उनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ।**

चिता–चीता, पिता–पीता, कुल–कूल, ओर–और, समान–सामान, घटना–घटाना, दिया–दीया।

9. **सही जोड़ी मिलाइए।**

दैनिक	–	काका
कीमती	–	पद
ऊँचा	–	कामकाज
बूढ़े	–	कलमदान
शेष	–	मन
अधीर	–	जीवन

योग्यता विस्तार

1. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को 'बाबू' के नाम से जाना जाता है इसी प्रकार महात्मा गाँधी को 'बापू' कहा जाता हैं। हमारे देश के ऐसे बहुत सारे महापुरुष एवं क्रांतिकारी हुए है जिन्हें हम उनके उपनाम से जानते हैं। आप उनके वास्तविक नाम तथा उनके उपनाम की सूची तैयार कीजिए।
2. राजेन्द्र बाबू के विषय में जानकारी पुस्तकालय से ढूँढकर पढ़िए और उनकी चारित्रिक विशेषताओं का लेखन कीजिए।
3. 'सादा जीवन उच्च विचार' विषय पर कक्षा में अपने विचार व्यक्त कीजिए।
4. गाँधीजी और लाल बहादुर शास्त्री जी का जीवन भी बहुत सरल और सादा था। उनके जीवन से ऐसी घटनाएँ खोजकर कक्षा में सुनाइए।

446RPK